पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' भाग-1

गद्य-खंड

धूल (रामविलास शर्मा)

पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ में लेखक ने धूल की महिमा, उपलब्धता और उपयोगिता का बखान किया है। धूल के भौतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्त्व को बताते हुए धूल और मिट्टी में अंतर भी स्पष्ट किया हैं। धूल के माध्यम से लेखक ने संस्कृति के प्रति गाँव और शहर के लगाव में जो परिवर्तन आया है उसे भी स्पष्ट कर दिया है। उन्होंने धूल के विभिन्न रूपों का वर्णन करते हुए देश प्रेम का पाठ भी पढ़ा दिया है।

पाठ का सारांश

हीरा और धूल धूसरित शिशु–हीरा और शिशु दोनों अत्यंत मूल्यवान हैं। लोग हीरे को धूल रहित चमकता हुआ पसंद करते हैं लेकिन शिशु धूल भरा हीरा है। धूल के बिना किसी ग्रामीण बच्चे की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जिस प्रकार रेणु फूल का शृंगार करती है उसी प्रकार धूल शिशु के मुख का सहज सौंदर्य है। धनवान लोग अनेक प्रसाधनों से बालकृष्ण का शृंगार करते हैं, लेकिन उनके मुख पर जो गोधूलि लगाई जाती है उसके सामने सभी प्रसाधन फीके हो जाते हैं।

हमारी वर्तमान सभ्यता की धूल के प्रति धारणा–हमारी वर्तमान सभ्यता धूल के स्पर्श से बचना चाहती है। धूल से बचने के लिए लोग ऊपरी तलों पर रहते हैं। माँ बच्चों से कहती है–'धूल में मत खेलो'। हमारी शहरी सभ्यता धूल भरे हीरों को पसंद नहीं करती। वह सोचती है कि धूल से हमारे नकली शृंगार प्रसाधन धुँधले पड़ जाएँगे। धूल को हमारी वर्तमान सभ्यता मैल मानती है।

अखाड़े की मिट्टी का महत्त्व–जो लोग धूल से ही घृणा करते हैं अखाड़े की मिट्टी से सने शरीर को देखकर तो वे शायद उबकाई ही करने लगेंगे। जो अखाड़े की मिट्टी में सनने से वंचित रहते हैं, वे अभागे हैं। अखाड़े की मिट्टी साधारण मिट्टी नहीं है, बल्कि तेल और मट्ठे से सिझाई हुई मिट्टी है, जिसे देवताओं पर चढ़ाया जाता है। इस मिट्टी में जो सुख मिलता है वह दुर्लभ है। पसीने से तर बदन पर मिट्टी ऐसे फिसलती है जैसे आदमी कुआँ खोदकर निकला हो। उसकी माँसपेशियाँ फूल उठती हैं, वह हरा हो जाता है। मिट्टी शरीर बनाती है क्योंकि शरीर मिट्टी का ही बना होता है।

मिट्टी की उपयोगिता–कुल विद्वान शरीर को मिट्टी कहकर मिट्टी और शरीर दोनों की असारता सिद्ध करते हैं। परंतु यह भी ध्यान देने की बात है कि जीवन के लिए जितने भी सार तत्त्व अनिवार्य हैं वे सब मिट्टी से ही मिलते हैं। रूप, रस गंध और स्पर्श ये सब मिट्टी से ही संभव है। मिट्टी से तात्पर्य धूल से ही है। यद्यपि मिट्टी और धूल में थोड़ा सा अंतर है लेकिन उतना ही जितना शब्द और रस में देह और प्राण में, चाँद और चाँदनी में। मिट्टी की आभा का नाम ही धूल है।

धूल का स्वरूप और गोधूलि–गर्द का नाम धूल नहीं है, बल्कि धूल वह है, जिसे गोधूलि शब्द से अमर किया गया है। धूल वह है, अमराइयों के पीछे छिपे सूर्य की किरणें जिसे सोना बना देती हैं। धूल वह है, सूर्यास्त के उपरांत गाड़ियों के निकल जाने पर जो रूई की तरह छा जाती है। धूल वह है, जो चाँदनी रात में मेले में जाने वाली गाड़ियों के पीछे उड़ती है। धूल वह है, जो शिशु के मुख पर और फूल की पंखुड़ियों पर सौंदर्य बन कर छा जाती है। 'गोधूलि' शब्द का प्रयोग शहर के लोग निमंत्रण-पत्र में 'गोधूलिकी बेला' में आने के लिए कहकर कर लेते हैं लेकिन उन्हें गोधूलि का पता नहीं है। गोधूलि वास्तव में गाँव की संपत्ति है। गोधूलि-हाथी-घोड़ों के चलने से उठने वाली धूल नहीं बल्कि गायों और गोपालों के चलने से उठने वाली धूल है।

धूल के प्रति श्रद्धा-भक्ति–धूल के प्रति हमेशा से श्रद्धा और भक्ति का भाव रहा है। सती उसे माथे से लगाती हैं। योद्धा उसे आँखों से लगाता है। युलिसिस ने प्रवास से लौटने पर इथाका की धूलिचूमी थी। यूक्रैन के मुक्त होने पर लाल सैनिक ने श्रद्धा से वहाँ की धूल का स्पर्श किया था। श्रद्धा, भक्ति, स्नेह आदि की चरम अभिव्यक्ति के लिए धूल से बढ़कर और कोई साधन नहीं है।

धूल से देशभक्ति की प्रेरणा–लेखक धूल से देशभक्ति का पाठ पढ़ाना चाहता है। वह कहता है कि वास्तव में सच्ची देश भक्ति तो यह है कि हम अपने देश की धूल को माथे से लगाएँ। लेकिन यदि इतना नहीं कर सकते तो कम-से-कम उस पर अपने पैर तो रखे रहे यानी उससे जुड़े रहें। हमारे किसानों के हाथ-पैर और मुँह पर छाई धूल हमारी सभ्यता की कहानी कहती है कि हम मिट्टी से जुड़े लोग हैं। हमारे धूल भरे हीरे यानी गाँव के बच्चे जिनकी दूसरों को केवल धूल दिखाई देती है भीतर छिपी क्रांति नहीं दिखाई देती, वे एक दिन अपनी अमरता और दृढ़ता का प्रमाण देंगे। क्योंकि "हीरा वही घन चोट न टूटे"। वे उलटकर चोट भी करेंगे तब काँच और हीरे का अंतर स्पष्ट हो जाएगा और हम धूल को माथे से लगाना सीख जाएँगे।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) शिशु भोलानाथ के संसर्ग से तो 'मैले जो करत गात' की नौबत आई, अखाड़े की मिट्टी में सनी हुई देह से तो कहीं उबकाई ही आने लगे। जो बचपन में धूल से खेला है, वह जवानी में अखाड़े की मिट्टी में सनने से कैसे वंचित रह सकता है? रहता है तो उसका दुर्भाग्य है और क्या! यह साधारण धूल नहीं है, वरन् तेल और मट्ठे से सिझाई हुई वह मिट्टी है, जिसे देवता पर चढ़ाया जाता है। संसार में ऐसा सुख दुर्लभ है। पसीने से तर बदन पर मिट्टी ऐसे फिसलती है, जैसे आदमी कुँआ खोदकर निकला हो। उसकी माँसपेशियाँ फूल उठती हैं, आराम से वह हरा होता है, अखाड़े में निर्द्वंद्व चारों खाने चित्त लेटकर अपने को विश्वविजयी लगाता है। मिट्टी उसके शरीर को बनाती है क्योंकि शरीर

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

1. **जो बचपन में धूल से खेला है, वह किससे वंचित नहीं रह सकता–**
   (क) धन अर्जित करने से (ख) बल अर्जित करने से
   (ग) मिट्टी में सनने से (घ) कीचड़ में सनने से।
2. **अखाड़े की मिट्टी में सनने से वंचित रहना क्या है–**
   (क) दुर्भाग्य (ख) सौभाग्य
   (ग) लाभ (घ) हानि।
3. **अखाड़े की मिट्टी किससे सिझाई जाती है–**
   (क) दूध और घी से (ख) तेल और मट्ठे से
   (ग) शहद और दूध से (घ) दूध और दही से।
4. **देवता पर किसे चढ़ाया जाता है–**
   (क) दूध को (ख) दही को
   (ग) अखाड़े की मिट्टी को (घ) जल को।
5. **अखाड़े में चारों खाने चित्त लेटकर, आदमी स्वयं को क्या प्रदर्शित करता है–**
   (क) राजा (ख) विश्वविजयी
   (ग) पराजित (घ) कमज़ोर।

उत्तर– 1. (ग) 2. (क) 3. (ख) 4. (ग) 5. (ख)।

(2) शरीर और मिट्टी को लेकर संसार की असारता पर बहुत कुछ कहा जा सकता है परंतु यह भी ध्यान देने की बात है कि जितने सारतत्त्व जीवन के लिए अनिवार्य हैं, वे सब मिट्टी से ही मिलते हैं। जिन फूलों को हम अपनी प्रिय-वस्तुओं का उपमान बनाते हैं, वे सब मिट्टी की ही उपज हैं। रूप, रस, गंध, स्पर्श-इन्हें कौन संभव करता है? माना कि मिट्टी और धूल में अंतर है, लेकिन उतना ही, जितना शब्द और रस में, देह और प्राण में, चाँद और चाँदनी में। मिट्टी की आभा का नाम धूल है और मिट्टी के रंग-रूप की पहचान उसकी धूल से ही होती है।

1. **शरीर और मिट्टी को लेकर किस पर बहुत कुछ कहा जा सकता है–**
   (क) संसार की सुंदरता पर (ख) संसार के महत्त्व पर
   (ग) संसार की असारता पर (घ) संसार के सारतत्त्व पर।
2. **जीवन के लिए अनिवार्य सार तत्त्व कहाँ से मिलते हैं–**
   (क) जल से (ख) मिट्टी से
   (ग) वनस्पति से (घ) अग्नि से।
3. **अपनी प्रिय-वस्तुओं का उपमान हम किसे बनाते हैं–**
   (क) पक्षियों को (ख) वृक्षों को
   (ग) फूलों को (घ) तारों को।
4. **मिट्टी और धूल में कितना अंतर है–**
   (क) जितना शब्द और रस में (ख) जितना देह और प्राण में
   (ग) जितना चाँद और चाँदनी में (घ) ये सभी।
5. **मिट्टी के रूप-रंग की पहचान क्या है–**
   (क) उसकी गंध (ख) उसकी नमी
   (ग) उसकी धूल (घ) उसका उपजाऊपन।

उत्तर– 1. (ग) 2. (ख) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग)।

(3) गोधूलि पर कितने कवियों ने अपनी कलम नहीं तोड़ दी, लेकिन यह गोधूलि गाँव की अपनी संपत्ति है, जो शहरों के बाटे नहीं पड़ी। एक प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता के निमंत्रण-पत्र में गोधूलि की बेला में आने का आग्रह किया गया था, लेकिन शहर में धूल-धक्कड़ के होते हुए भी गोधूलि कहाँ? यह कविता की विडंबना थी और गाँवों में भी जिस धूलि को कवियों ने अमर किया है, वह हाथी-घोड़ों के पग-संचालन से उत्पन्न होनेवाली धूल नहीं है, वरन् गो-गोपालों के पदों की धूलि है।

1. **कवियों ने अपनी कलम किस पर तोड़ दी–**
   (क) नारी पर (ख) प्रकृति पर
   (ग) गोधूलि पर (घ) इनमें से किसी पर नहीं।
2. **गोधूलि किसकी संपत्ति है–**
   (क) शहर की (ख) गाँव की
   (ग) देश की (घ) समाज की।
3. **शहर में क्या नहीं है–**
   (क) गोधूलि (ख) स्वच्छता
   (ग) भाईचारा (घ) धन-संपत्ति।
4. **गाँव की गोधूलि किसके पैरों की धूलि है–**
   (क) हाथियों के (ख) घोड़ों के
   (ग) गो-गोपालों के (घ) किसानों के।
5. **'हाथी-घोड़ों' में कौन-सा समास है–**
   (क) तत्पुरुष समास (ख) द्वंद्व समास
   (ग) कर्मधारय समास (घ) द्विगु समास।

उत्तर– 1. (ग) 2. (ख) 3. (क) 4. (ग) 5. (ख)।

(4) 'नीच को धूरि समान' वेद-वाक्य नहीं है। सती उसे माथे से, योद्धा उसे आँखों से लगाता है, युलिसिस ने प्रवास से लौटने पर इथाका की धूलि चूमी थी। यूक्रैन के मुक्त होने पर एक लाल सैनिक ने उसी श्रद्धा से वहाँ भी धूल का स्पर्श किया था। श्रद्धा, भक्ति, स्नेह इनकी चरम व्यंजना के लिए धूल से बढ़कर और कौन साधन है? यहाँ तक कि घृणा, असूया आदि के लिए भी धूल चाटने, धूल झाड़ने आदि की क्रियाएँ प्रचलित हैं।

1. **'नीच को धूरि समान' क्या नहीं है–**
   (क) सूक्ति (ख) साधू-वाणी
   (ग) वेद-वाक्य (घ) पौराणिक कथन।
2. **योद्धा धूलि को कहाँ लगाता है–**
   (क) हाथों पर (ख) पैरों पर
   (ग) आँखों पर (घ) शरीर पर।
3. **धूल किसकी चरम व्यंजना का साधन है–**
   (क) श्रद्धा की (ख) भक्ति की
   (ग) स्नेह की (घ) इन सभी की।
4. **लाल सैनिक ने कहाँ की धूल का श्रद्धापूर्वक स्पर्श किया–**
   (क) स्पेन की (ख) यूक्रैन की
   (ग) चीन की (घ) भारत की।
5. **'असूया' शब्द का अर्थ है–**
   (क) स्नेह (ख) क्रोध
   (ग) ईर्ष्या (घ) मोह।

उत्तर– 1. (ग) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ख) 5. (ग)।

(5) हमारी देशभक्ति धूल को माथे से न लगाए तो कम-से-कम उस पर पैर तो रखे। किसान के हाथ-पैर, मुँह पर छाई हुई यह धूल हमारी सभ्यता से क्या कहती है? हम काँच को प्यार करते हैं, धूली भरे हीरे में धूल ही दिखाई देती है, भीतर की कांति आँखों से ओझल रहती है, लेकिन ये हीरे अमर हैं और एक दिन अपनी अमरता का प्रमाण भी देंगे। अभी तो उन्होंने अटूट होने का ही प्रमाण दिया है–"हीरा वही घन चोट न टूटे।" वे उलटकर चोट भी करेंगे और तब काँच और हीरे का भेद जानना बाकी न रहेगा। तब हम हीरे से लिपटी हुई धूल को भी माथे से लगाना सीखेंगे।

1. **'माथे से लगाना' का अर्थ है–**
   (क) सजाना (ख) सम्मान करना
   (ग) अपमान करना (घ) इनमें से कोई नहीं।
2. **हम किसे प्यार करते हैं–**
   (क) हीरे को (ख) सोने को
   (ग) चाँदी को (घ) काँच को।
3. **धूलि भरे हीरे में हमें क्या दिखाई देती है–**
   (क) धूल (ख) सुंदरता
   (ग) चमक (घ) गंदगी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

4. हीरे एक दिन किसका प्रमाण देंगे–

(क) अपनी सुंदरता का (ख) अपनी कठोरता का

(ग) अपनी अमरता का (घ) अपनी कोमलता का।

5. किसान के हाथ-पैर और मुख पर क्या छाई रहती है–

(क) उदासी (ख) खुशी

(ग) धूल (घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– 1. (ख) 2. (घ) 3. (क) 4. (ग) 5. (ग)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. 'धूल' पाठ के लेखक का नाम है–

(क) यशपाल (ख) रामविलास शर्मा

(ग) शरद जोशी (घ) धीरंजन मालवे।

2. रामविलास शर्मा का जन्म कब हुआ–

(क) सन् 1910 में (ख) सन् 1915 में

(ग) सन् 1912 में (घ) सन् 1920 में।

3. हीरे का प्रेमी किसे कहा गया है–

(क) गाँव वालों को (ख) शिशुओं को

(ग) देवताओं को (घ) आधुनिक सभ्य लोगों को।

4. लेखक किसे लोक संस्कृति का नवीन जागरण कहते हैं–

(क) धुरि को (ख) धूल को

(ग) धूलि को (घ) कारखानों को।

5. 'गर्द' शब्द का प्रयोग कौन करते हैं–

(क) गाँव के लोग (ख) शहर के लोग

(ग) मज़दूर लोग (घ) गरीब लोग।

6. हीरे के प्रेमी उसे कैसा देखना चाहते हैं–

(क) साफ़-सुथरा

(ख) खरादा हुआ

(ग) आँखों में चकाचौंध पैदा करता हुआ

(घ) उपर्युक्त सभी रूपों में।

7. हमारी सभ्यता धूल से क्यों बचना चाहती है–

(क) क्योंकि उनके अनुसार धूल से उनका शरीर गंदा हो जाता है।

(ख) उनके अनुसार धूल में गँवार लोग रहते हैं।

(ग) वे अपने को श्रेष्ठ नागरिक समझते है।

(घ) धूल से उनका स्वास्थ्य खराब होता है।

8. लेखक बालकृष्ण के मुँह पर छाई-गोधूलि को श्रेष्ठ क्यों मानता है–

(क) धूल स्वास्थ्यवर्धक होती है।

(ख) धूल बालकृष्ण के सौंदर्य को कई गुणा बढ़ा देती है।

(ग) बालकृष्ण की पहचान धूल के ही कारण होती है।

(घ) ग्रामीण बच्चे धूल से ही अच्छे लगते हैं।

9. 'धूल' निबंध का उद्देश्य क्या है–

(क) ग्रामीण संस्कृति तथा जीवन के महत्त्व को समझाना

(ख) 'धूल' के लाभ बताना

(ग) शहरी संस्कृति की आलोचना करना

(घ) ग्रामीण और शहरी संस्कृति की तुलना करना।

10. हमारी सभ्यता किसके संसर्ग से बचना चाहती है–

(क) कीचड़ के (ख) धूल के

(ग) पानी के (घ) मिट्टी के।

11. कौन आसमान में घर बनाना चाहता है–

(क) अमीर लोग (ख) नगरीय सभ्यता

(ग) मज़दूर (घ) प्राचीन सभ्यता।

12. 'रूप, रस, गंध, स्पर्श' को कौन संभव करता है–

(क) जल (ख) अग्नि

13. मिट्टी की आभा क्या है–

(क) जल (ख) गंध

(ग) धूल (घ) कीचड़।

14. युलिसिस ने प्रवास से लौटने पर कहाँ की धूलि चूमी–

(क) इथाका की (ख) यूक्रेन की

(ग) स्पेन की (घ) जापान की।

15. लेखक ने 'धूल' को क्या कहा है–

(क) जीवन का गीत (ख) जीवन का सार

(ग) जीवन का यथार्थवादी गद्य (घ) इनमें से कोई नहीं।

16. धूल का रंग कैसा माना गया है–

(क) काला

(ख) पीला

(ग) लाल

(घ) शरत् के उजले बादलों जैसा।

17. धूल के लिए कौन-सा विशेषण अनावश्यक है–

(क) श्वेत (ख) लाल

(ग) नीला (घ) पीला।

18. चाँदनी रात में मेले जाने वाली गाड़ियों के पीछे धूल कैसे उड़ती है–

(क) पक्षी की भाँति (ख) तूफ़ान की भाँति

(ग) कवि-कल्पना की भाँति (घ) वायुयान की भाँति।

19. हमने धूल को किस शब्द में अमर कर दिया है–

(क) धूरि में (ख) धूलि में

(ग) गोधूलि में (घ) धूली में।

20. हमारा शरीर किसका बना हुआ है–

(क) हड्डियों का (ख) रक्त का

(ग) मिट्टी का (घ) सोने का।

उत्तर– 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क) 5. (ख) 6. (घ) 7. (क) 8. (ख) 9. (क) 10. (ख) 11. (ख) 12. (घ) 13. (ग) 14. (क) 15. (ग) 16. (घ) 17. (क) 18. (ग) 19. (ग) 20. (ग)।

भाग-2

(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1: हीरे के प्रेमी उसे किस रूप में पसंद करते हैं?

उत्तर : हीरे के प्रेमी उसे साफ़-सुथरा, खरादा हुआ, आँखों में चकाचौंध पैदा करता हुआ–इस रूप में पसंद करते हैं।

प्रश्न 2: लेखक ने संसार में किस प्रकार के सुख को दुर्लभ माना है?

उत्तर : अखाड़े की मिट्टी में सनने और उसमें लोट-पोट होने में जो सुख मिलता है, उसे लेखक ने दुर्लभ माना है।

प्रश्न 3: मिट्टी की आभा क्या है? उसकी पहचान किससे होती है?

उत्तर : मिट्टी की आभा धूल है। मिट्टी की पहचान धूल से ही होती है।

प्रश्न 4: धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना क्यों नहीं की जा सकती?

उत्तर : जिस व्यक्ति का बचपन गाँव में व्यतीत हुआ हो वह धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना भी नहीं कर सकता क्योंकि गाँव का प्रत्येक शिशु धूल में सना रहता है जिस प्रकार धूल फूल का शृंगार करती है उसी प्रकार धूल शिशु का सौंदर्य बढ़ाती है।

प्रश्न 5: हमारी सभ्यता धूल से क्यों बचना चाहती है?

उत्तर : हमारी शहरी सभ्यता धूल को मैल और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक मानती है। वह समझती है कि इससे उसका सौंदर्य नष्ट हो जाएगा। इसीलिए वह धूल से बचना चाहती है और ऊँची-ऊँची इमारतों में रहती है जहाँ धूल न पहुँच सके।

प्रश्न 6: अखाड़े की मिट्टी की क्या विशेषता होती है?

उत्तर : अखाड़े की मिट्टी सामान्य मिट्टी से भिन्न होती है। इस मिट्टी को तेल और मट्ठे से सिझाया जाता है। यह बहुत पवित्र मानी

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

लोट-पोट होने वाला व्यक्ति सदैव स्वस्थ रहता है। यह आनंददायी मिट्टी है।

प्रश्न 7: श्रद्धा, भक्ति, स्नेह की व्यंजना के लिए धूल सर्वोत्तम साधन किस प्रकार है?

उत्तर : धूल के द्वारा श्रद्धा, भक्ति और स्नेह की अभिव्यक्ति की जाती है क्योंकि यह देश, धर्म और संस्कृति का प्रतीक है। सती धूल को माथे पर लगाती है। वह वीर सैनिक अपनी मातृभूमि की धूल को तिलक स्वरूप लगाता है। युलिसिस ने प्रवास से लौटने पर इथाका की धूल घूमी थी। यूक्रेन के मुक्त होने पर लाल सैनिक ने वहाँ की धूल का स्पर्श किया था।

प्रश्न 8: इस पाठ में लेखक ने नगरीय सभ्यता पर क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर : नगरीय सभ्यता पर लेखक ने यह व्यंग्य किया है कि नगरीय लोग धूल को मैल और अस्वास्थ्यकर मानते हैं। वे धूल से सने शिशु के स्पर्श से बचना चाहते हैं। उन्हें लगता है कि धूल से उनका सौंदर्य बिगड़ जाएगा। वे धूल से बचने के लिए भवनों के ऊपरी तलों पर रहते हैं जहाँ धूल नहीं पहुँच पाती।

प्रश्न 9: गोधूलि केवल गाँव की संपत्ति क्यों है?

उत्तर : गोधूलि केवल गाँव की संपत्ति इसलिए है, क्योंकि गायें और ग्वाले गाँव में ही होते हैं। जब गायें वहाँ की गलियों से गुजरती हैं तो वे गलियाँ धूल से भर जाती हैं। यह धूल केवल गाँव में ही प्राप्त होती है।

प्रश्न 10: अखाड़े की मिट्टी में बालक को कौन-सा सुख प्राप्त होता है?

उत्तर : अखाड़े की मिट्टी में बालक को जीवन का वास्तविक सुख प्राप्त होता है। वह पसीने से तर होकर कुश्ती और व्यायाम करता है। इससे उसकी मांसपेशियाँ मजबूत और शरीर स्वस्थ बनता है। वह अखाड़े की मिट्टी में चारों खाने चित्त होकर भी स्वयं को विश्वविजेता मानता है। इस मिट्टी में उसे एक असीम सुख प्राप्त होता है।

प्रश्न 11: धूल महिमाशाली क्यों है?

उत्तर : धूल महिमाशाली इसलिए है, क्योंकि योद्धा रणभूमि में जाने से पहले इसे अपनी आँखों से लगाता है। सती स्त्री इसे अपने मस्तक पर धारण करती है। देशभक्त नागरिक विदेश से लौटकर इसे चूमता है। हम अपनी श्रद्धा और भक्ति को प्रकट करने के लिए धूल को ही माथे पर लगाते हैं।

प्रश्न 12: शहरवासियों को धूल से सनी देह देखकर उबकाई क्यों आने लगती है?

उत्तर : शहर के लोग चमक-धमक भरी बनावटी जिंदगी को महत्त्व देते हैं। वे धूल को गंदगी मानकर उससे बचते हैं। इसीलिए उन्हें अखाड़े की मिट्टी से सनी देह देखकर उबकाई आने लगती है।

प्रश्न 13: शहरी सभ्यता बालक से क्या चाहती है? हम हीरे से लिपटी धूल को माथे से लगाना कब सीख पाएँगे?

उत्तर : शहरी सभ्यता बालक को धूल से बचाना चाहती है। ग्रामीण हीरे धूल से लिपटे हैं। जब ग्रामीण सभ्यता नगरीय जीवन पर चोट करेगी तब हीरे को चमक और उस पर लिपटी धूल का सम्मान होगा और हम उसे माथे से लगाना सीख जाएँगे।

प्रश्न 14 : लेखक 'बालकृष्ण' के मुँह पर छाई गोधूलि को श्रेष्ठ क्यों मानता है?

उत्तर : गोधूलि गायों और गोपालों के चलने से उड़ने वाली धूल को कहते हैं। यह बहुत पवित्र मानी गई है। गोधूलि 'बालकृष्ण' को बहुत प्रिय है। इससे 'बालकृष्ण' का शृंगार किया जाता है। यद्यपि शृंगार में अन्य कृत्रिम प्रसाधनों का भी प्रयोग किया जाता है लेकिन गोधूलि प्राकृतिक होती है। इससे 'बालकृष्ण' के मुख का सौंदर्य निखर उठता है। अन्य प्रसाधन तो शीघ्र ही फीके पड़ जाते हैं लेकिन गोधूलि

प्रश्न 15 : लेखक ने धूल और मिट्टी में क्या अंतर बताया है?

उत्तर : लेखक के अनुसार धूल मिट्टी में कोई विशेष अंतर नहीं है। इनमें केवल इतना ही अंतर है जितना शब्द और रस में, देह और प्राण में, चाँद और चाँदनी में। ये सब अलग-अलग होते हुए भी एक हैं। इनमें केवल नाम का ही अंतर है। धूल मिट्टी की आभा का नाम है। मिट्टी की पहचान उसकी धूल से ही होती है। वास्तव में धूल और मिट्टी एक ही हैं। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है।

प्रश्न 16 : ग्रामीण परिवेश में प्रकृति धूल के कौन-कौन-से सुंदर चित्र प्रस्तुत करती है?

उत्तर : ग्रामीण परिवेश में धूल के निम्नलिखित सुंदर चित्र दिखाई देते हैं-

(i) संध्या समय में गायों और गोपालों के घर वापस लौटते समय जो धूल उठती है वह बहुत सुंदर और पवित्र होती है।

(ii) अमराइयों के पीछे छिपे सूर्य की किरणों में जो धूल दिखाई देती है वह सोने के सौंदर्य को भी फीका कर देती है।

(iii) सूर्यास्त के बाद गाड़ियों के लीक पर से निकल जाने से जो धूल उड़ती है वह रुई के बादल या ऐरावत हाथी की तरह जहाँ की तहाँ स्थिर रह जाती है।

(iv) चाँदनी रात में मेले जाने वाली गाड़ियों के पीछे उड़ने वाली धूल कवि की कल्पना-सी लगती है।

प्रश्न 17 : 'हीरा वही घन चोट न टूटे' का संदर्भ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : यह बात लेखक ने हमारे किसानों, मज़दूरों और ग्रामीण बच्चों के विषय में कही है। इसका आशय यह है कि असली हीरा वही होता है, जो घन की चोट से भी नहीं टूटता। लेखक ने किसान मज़दूरों को धूल भरे हीरे कहा है। वह यह बताना चाहता है कि हमारे किसानों और मज़दूरों ने बहुत आघात सहे हैं लेकिन वे टूटे नहीं। उन्होंने हमेशा अपने अटूट होने का प्रमाण दिया है। अब वे उलटकर चोट भी करेंगे तब काँच और हीरे का अंतर स्पष्ट हो जाएगा और हम अपने ग्रामीण शिशुओं, किसानों और मज़दूरों को सम्मान देना सीख जाएँगे।

प्रश्न 18 : धूल, धूलि, धूली, धूरि और गोधूलि की व्यंजनाओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : लेखक के अनुसार धूल, धूलि, धूली, धूरि और गोधूलि की व्यंजनाएँ अलग-अलग हैं। धूल जीवन का यथार्थवादी गद्य है। धूलि उसकी कविता है। धूली छायावादी दर्शन है, जिसकी वास्तविकता संदिग्ध है। धूरि लोक-संस्कृति का नवीन जागरण है। गोधूलि गायों-गोपालों के चलने से उड़ने वाली धूल है। इनके रूप में भिन्नता भले ही हो लेकिन इनका रंग एक ही है।

प्रश्न 19 : 'धूल' पाठ का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'धूल' पाठ में धूल के महत्त्व, उपयोगिता और उपलब्धता को बताया गया है। हमारी सभ्यता ग्रामीण सभ्यता है जो धूल और मिट्टी से जुड़ी है। धूल श्रद्धा, भक्ति और स्नेह को अभिव्यक्त करने का साधन है। पाठ में लेखक ने ग्रामीण जीवन के दर्शन कराने के साथ-साथ शहरी सभ्यता पर व्यंग्य भी किया है। धूल के नन्हें कणों के वर्णन से इसमें देश प्रेम का पाठ भी पढ़ाया गया है।

प्रश्न 20 : कविता को विडंबना मानते हुए लेखक ने क्या कहा है?

उत्तर : अनेक कवियों ने गोधूलि पर कविताएँ लिखी हैं। लेखक के अनुसार वे कविताएँ विडंबना हैं, क्योंकि उनमें कवियों ने गोधूलि का वर्णन करते हुए एक बिंब ही उपस्थित किया है। गोधूलि का वास्तविक रूप तो गाँव में ही दिखाई देता है। इसी प्रकार नगरीय सभ्यता में 'गोधूलि' शब्द का अर्थ संध्या समय से किया जाता है। जबकि 'गोधूलि' संध्या का समय नहीं बल्कि संध्या समय का वह अद्भुत दृश्य है, जो गाय-गोपालों के घर वापस लौटने से उड़ने वाली धूलि के कारण उत्पन्न होता है। नगरीय समाज और कविता में गोधूलि का वास्तविक अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाया है। इसी को

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 21 : 'धन्य-धन्य वे हैं नर मैले जो करत गात कनिया लगाय धूरि ऐसे लरिकान की'–लेखक इन पंक्तियों द्वारा क्या कहना चाहता है?

उत्तर : प्रस्तुत पंक्ति में लेखक ने धूल की महिमा का वर्णन किया है। इसका आशय यह है कि धूल धूसरित बच्चे को गोद में उठाने वाला व्यक्ति धन्य है क्योंकि वह बच्चे के शरीर से लिपटी धूल से स्वयं को पवित्र कर लेता है। यद्यपि इन पंक्तियों को लिखने वाले ने अपनी एक हीनता प्रकट की है क्योंकि उसके अनुसार बच्चे के शरीर की धूल उसे उठाने वाले को पवित्र नहीं 'मैला' कर देती है। उसे 'मैला' शब्द की जगह 'पवित्र' शब्द का प्रयोग करना चाहिए था।

प्रश्न 22 : 'मिट्टी और धूल में अंतर है, लेकिन उतना ही, जितना शब्द और रस में, देह और प्राण में, चाँद और चाँदनी में।' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस पंक्ति के द्वारा लेखक धूल और मिट्टी का अंतर बताना चाहता है। इसका आशय यह है कि मिट्टी और धूल में बहुत सूक्ष्म अंतर है। वास्तव में ये अलग-अलग होते हुए भी परस्पर अंतर्निहित हैं। जैसे शब्द में रस, देह में प्राण और चाँद में चाँदनी निहित होती है उसी प्रकार मिट्टी में धूल निहित है। वास्तव में धूल मिट्टी की आभा का नाम है।

प्रश्न 23 : 'हमारी देशभक्ति धूल को माथे से न लगाए तो कम-से-कम उस पर पैर तो रखे।' इस पंक्ति के द्वारा लेखक क्या सीख देना चाहता है?

उत्तर : इस पंक्ति में धूल के माध्यम से लेखक देशभक्ति की शिक्षा देना चाहता है। इसका आशय यह है कि आज हमारे अंदर से देश और संस्कृति के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना कम हो गई है। क्योंकि आज हम देश की मिट्टी को माथे से नहीं लगाते बल्कि उसका अपमान करते हैं। लेखक सीख देना चाहता है कि यदि हम मातृभूमि की धूल को माथे से नहीं लगा सकते अर्थात् उसका सम्मान नहीं कर सकते तो कम-से-कम उस पर पैर अवश्य टिकाएँ रखें अर्थात् उससे जुड़े अवश्य रहें। देश और संस्कृति से कटकर किसी का भी अस्तित्व नहीं रहता है।

प्रश्न 24 : 'वे उलटकर चोट भी करेंगे और तब काँच और हीरे का भेद जानना बाकी न रहेगा।' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इसका आशय यह है कि हीरे पर हथौड़े से चोट मारने पर भी वह टूटता नहीं, जबकि काँच चोट मारने से टूटकर बिखर जाता है और चोट करने वाले को भी घायल कर देता है। लेखक ने किसान-मज़दूरों को धूल भरे हीरे कहा है। उन्होंने सदियों से अत्याचार और शोषण का आघात सहा है लेकिन अब वे इतने समर्थ हो गए हैं कि पलटकर चोट कर सकेंगे। उन्होंने अपने अटूट होने का तो प्रमाण दे दिया है, अब वे अपनी ताकत का भी प्रमाण देंगे तभी हम उनके ऊपर लगी धूल को माथे से लगाना सीखेंगे अर्थात् उनका सम्मान करेंगे।

प्रश्न 25 : गोधूलि का गाँव से क्या संबंध है?

उत्तर : गोधूलि ग्रामीण जीवन का अभिन्न अंग है। आज भी गाँवों में गायें हैं और गोपाल हैं। अधिकतर रास्ते भी मिट्टी और धूल से सने हैं। गायें रोज चरने के लिए गाँवों के धूल भरे रास्तों के बीच से खेतों-खलियानों में जाती हैं। जब वे चरकर वापस गाँव में लौटती हैं, तो साँझ हो जाती है। गायों के खुरों और गोपालों के पाँवों के चलने से उठने वाली धूल सारे आकाश में छा जाती है। यह वातावरण केवल गाँवों में ही होता है, शहरों में नहीं। अतः गाँवों का गोधूलि से सहज और सीधा संबंध है। गाँव के लोग इस धूल को अपना शृंगार मानते हैं, मैल नहीं। बच्चों के शरीर पर पड़ी इस धूल को देखकर गाँववासी रीझ उठते हैं।

प्रश्न 26 : 'धूल गंदगी नहीं, देश की मिट्टी की, लोक-संस्कृति की पहचान है।' इस कथन के आलोक में धूल के महत्त्व पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर : धूल मिट्टी से उपजी है और उसकी आभा है। यह गंदगी नहीं है। इसी धूल में सनकर ही हमारी लोक-संस्कृति फली-फूली है। हमारे गाँवों के लोग गो-पूजक, गो-आराधक और गो-पालक हैं। उन्हें गोधूलि वेला से सहज प्यार है। वे साँझ के समय गायों और गोपालों के पैरों से उठने वाली धूल को अपना शृंगार मानते हैं। उन्हें अपने धूल-सने बच्चे बहुत सुंदर प्रतीत होते हैं। वे ऐसे बच्चों से लाड़ करते हैं। गाँववासी मिट्टी के अखाड़ों में खेलकूद कर ही बड़े हुए हैं। कुश्ती हमारे गाँवों का सबसे प्रिय खेल है। यह खेल मिट्टी के अखाड़ों में खेला जाता है। जब कोई पहलवान मिट्टी में सनकर कुश्ती करता है तो वह बहुत आनंदित अनुभव करता है। अपने शरीर पर मिट्टी मलने से उसे आनंद मिलता है। एक प्रकार से धूल हमारी लोक-संस्कृति की पहचान है।

प्रश्न 27 : 'धूल भरे हीरे' से लेखक का क्या तात्पर्य है? हीरे तथा धूल के संदर्भ में शिशु की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

उत्तर : लेखक ने गाँवों की धूल में सने बालकों को 'धूल भरे हीरे' कहा है। जो लोग गाँवों के परिवेश में पल कर बड़े हुए हैं, उन्हें धूल से सने बालक ही अच्छे लगते हैं। गाँव के लोग धूल को अपना शृंगार मानते हैं। वे धूल से सने बालक को धूल भरे हीरे कहते हैं। नगर के लोग इस धूल से घृणा करते हैं। उन्हें धूल और गर्द का अंतर पता नहीं है। वे अपने बच्चों को साफ़-सुथरा रखने के लिए धूल के पास भी नहीं फटकने देते। वे तो साफ़-सुथरे और तराशे हुए हीरे के पारखी हैं। इसलिए उन्हें अपने बच्चे भी साफ़-स्वच्छ कपड़ों में ही अच्छे लगते हैं। लेखक का मत है कि गाँव के धूल-भरे हीरे काँच के समान चमकते हुए नगरवासी लोगों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ और मजबूत हैं। जब ये उलटकर चोट करते हैं तो आधुनिक सभ्यता उसके सामने टिक नहीं पाती।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश– निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

गोधूलि पर कितने कवियों ने अपनी कलम नहीं तोड़ दी, लेकिन यह गोधूलि गाँव की अपनी संपत्ति है, जो शहरों के बाटे नहीं पड़ी। एक प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता के निमंत्रण-पत्र में गोधूलि की बेला में आने का आग्रह किया गया था, लेकिन शहर में धूल-धक्कड़ के होते हुए भी गोधूलि कहाँ? यह कविता की विडंबना थी और गाँवों में भी जिस धूलि को कवियों ने अमर किया है, वह हाथी-घोड़ों के पग-संचालन से उत्पन्न होनेवाली धूल नहीं है, वरन् गो-गोपालों के पदों की धूलि है।

1. **कवियों ने अपनी कलम किस पर तोड़ दी–**
   (क) नारी पर (ख) प्रकृति पर
2. **गोधूलि किसकी संपत्ति है–**
   (क) शहर की (ख) गाँव की
   (ग) देश की (घ) समाज की।
3. **शहर में क्या नहीं है–**
   (क) गोधूलि (ख) स्वच्छता
   (ग) भाईचारा (घ) धन-संपत्ति।
4. **गाँव की गोधूलि किसके पैरों की धूलि है–**
   (क) हाथियों के (ख) घोड़ों के
   (ग) गो-गोपालों के (घ) किसानों के।
5. **'हाथी-घोड़ों' में कौन-सा समास है–**
   (क) तत्पुरुष समास (ख) द्वंद्व समास

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

6. **'धूल' पाठ के लेखक का नाम है–**

(क) यशपाल (ख) रामविलास शर्मा

(ग) शरद जोशी (घ) धीरंजन मालवे।

7. **'धूल' निबंध का उद्देश्य क्या है–**

(क) ग्रामीण संस्कृति तथा जीवन के महत्त्व को समझाना

(ख) 'धूल' के लाभ बताना

(ग) शहरी संस्कृति की आलोचना करना

(घ) ग्रामीण और शहरी संस्कृति की तुलना करना।

8. **हमारा शरीर किसका बना हुआ है–**

(क) हड्डियों का (ख) रक्त का

(ग) मिट्टी का (घ) सोने का।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. **हीरे के प्रेमी उसे किस रूप में पसंद करते हैं**

10. **श्रद्धा, भक्ति, स्नेह की व्यंजना के लिए धूल सर्वोत्तम साधन किस प्रकार है?**

11. **शहरी सभ्यता बालक से क्या चाहती है? हम हीरे से लिपटी धूल को माथे से लगाना कब सीख पाएँगे?**

12. **'धूल' पाठ का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in